REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

अनुवाद विज्ञान का महत्त्व एवं मराठी से हिंदी में अनूदित नाटक

प्रा. सुनिल बाबुराव काळे
हिंदी विभाग , कला व विज्ञान महाविद्यालय , चिंचोली (लिं.) ता. कन्नड ,
जि.औरंगाबाद .

भुमिका :

इक्कीसवीं शताब्दी आंतरराष्ट्रीय संस्कृती की शताब्दी है और इसकारण इसे अनुवाद की श्शताब्दी भी कहा गया है । संम्प्रेषण के नये माध्यमों के अविष्कारो ने वसुधैव कुटुम्बकम की उपनिषधिय कल्पना को साकार बना दिया है। भारत जैसे बहुभाषा भाषी राष्ट्र में परस्पर अनुवाद की तो आवश्यकता है ही साथ में हमें लगता है कि विश्व भाषाओं से भी अनुवाद की अनिवार्यता है इसी को मध्यनजर कर हमनें मराठी और हिंदी इन दो भाषाओं पर अनुवाद विज्ञान की उपादेयता पर अपना केंन्द्रण बनाया है।

अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है।एक भाषा–भाषी समुदाय में परस्पर संपर्क साधन तथा विचार विमर्श के लिए भाषा का व्यवहार किया जाता है, किंन्तु दो भिन्न भाषा–भाषी समुदायों के बींच विचारों के आदान–प्रदान के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पडती है।

मराठी और हिंदी यह दोन्हों भी भिन्न भिन्न भाषा है किंन्तु अनुवाद ने इन्हें आपस में जोडने का कार्य किंया है। मराठी के ऐसे अनेकानेक नाटक हमें देखने को मिलते हैं जिन्हे हिंदी में अनुदित कर हिंदी के पाठकों को मराठी के नाटकों का रसास्वाद्यन वे कर सके हैं, यह सब अनुवाद विज्ञान का आविष्कार है जो कि आज हम देख रहें है कि किसी भी भाषा की जो सर्वश्रेष्ठ कृती या साहित्य विश्व के कोने कोने में फैली हर एक भाषा में अनुवाद विज्ञान के कला के माध्यम द्वारा उसे वहॉं तक पहूॅंचाया जा रहा है। ८

आज छोटे बडें राष्ट्र और छोटी बडी जातियॉं भी परस्पर संबंध स्थापित करना चाहते हैं। सामान्य से व्यक्ति भी यह चाहता है कि वह भी संसार में विभिन्न भागों में फैले विभिन्न भाषा भाषी समुदायों के साथ संपर्क करे इसके लिये अनुवाद विज्ञान के सिवा सबसे बढिया माध्यम क्या हो सकता है इसलिये अनुवाद विज्ञान का महत्त्व अनन्य साधारण है।

अनुवाद की परिभाषाएँ

अनुवाद भाषाओं के बीच सम्प्रेषण की वह प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति के साथ सम्प्रेषण की प्रक्रिया को पुरा करता है। अनुवाद के लिए अंग्रजी में ट्रांन्सलेशन फेंच में द्रडुशन अरबी में तर्जुमा संस्कृत में छाया मराठी में भाषांतर आदि शब्दों का प्रयोग किंया जाता है।

अनुवाद की उपादेयता स्पष्ट करते हुए, जी गोपीनाथन लिखते है, “भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयंसिध्द है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में मुलभुत एकता

के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद द्वारा मानव की एकता और अखंडता तथा भौगोलिक और भाषायी दीवारों को डहाकर विश्वमैत्री की और भी सदृढ बना सकते है।" १

अनुवाद को लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते है, "मौलिक कृती के अनुवाद के द्वारा उसका शरीर परिवर्तित हो जाता है किंन्तु उसकी आत्मा उसके भाव यथावत रहते है।"२

डॉ.तीवारी अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार देते हैं, "भाषा धन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद है इन्ही प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दुसरी भाषा के निकटतः कथनतः और कथ्यत समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग अनुवाद कहलायेंगा ।"३

अनुवाद विज्ञान पर अधिक स्पष्टता और सहजता से प्रकाश डॉ. भानुदेव ने डाला है, वे कहते हैं-"एक भाषा मे व्यक्त भावों को दूसरी भाषा में इस तरह व्यक्त कर देना कि उनका स्वरूप न परिवर्तित हो जाए, उनका सौंदर्य न नष्ट हो जाए तथा वे दुरह अथवा अस्पष्ट न हो जावे।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षतः हम कह सकते हैं, अनुवाद मूल की रसाभिव्यक्ति, भावभिव्यक्ती,अर्थाभिव्यक्ती,सौदर्याभिव्यक्ति,शैली, संम्प्रेषण,संस्कृती प्रति-प्रतीकन की नवसर्जनात्मक चैतन्यशील प्रक्रिया है।हमें लगता है कि आधुनिक गद्य साहित्य मे सर्वाधीक लोकप्रीय विद्या कोई है तो वह नाटक विधा ही है । यह विधा ऐसी हैं कि जिसका रसास्वाद्यन पाठ ,(प्रेषकव्द्र दृश्य-श्राव्य दोनों ` ,द्वारा रता है, इस ार । यह बहुत ही लो प्रिय विधा हैं, इस विधा को लोकप्रिय बनाने में अनुवाद विज्ञान का बहुत महत्त्व अन्यन्य साधारण है।

नाटक और समाज का संबंध अत्यंत गहरा और पुराना है । नाटक सामाजिक जीवन की संजीव प्रतिलिपी है । वह मनुष्य के सामाजिक जीवन की जटील समस्याओं उसकी कर्म.-संकुलता से घिरी जिन्दगी को संवारने और अनसुलझी गुत्थीयों को सुलझाने और प्रसन्न मनोभावों को रंगमंच पर स्थपित करने को एकमात्र माध्यम नाटक है, और इसमें अधिकाधिक रसस्वाद्यान प्रेक्षक करता है, जो मानव जाती के उत्थान के लिए अधिक संम्प्रेषिय है ऐसे कृती को देश के अधिकाधिक भाषाओ में अनुवाद द्वारा पहूँचाकर अच्छे से अच्छा जो हैं उसपर हर एक मानव का अधिकार है ओर वह उसके भाषा में उस तक पहूँचना चाहिए उसमें ही मनुष्य का उत्कर्ष है ओर यही मनुष्यता धर्म है ओर यही अनुवाद विज्ञान का उद्वेश है । इसमें नाटक ऐसा माध्यम है जिसमें रंगमंचीय अवधारणा के कारण पाठक इसमें बहुत ज्यादा रसास्वाद्यान करता है, इसलिए हम देखते है कि नाटकों का अनुवाद देश के ज्यादातर भाषाओं में हमें देखने को मिलता है।

नाटयानुवाद की सफल रचना उसे ही कहा जा सकता है जिसमें रचनाकार और अनुवादक के बीच सामंजस्य स्थापित होना चाहीए। इसलिए अनुवादक अपनी रूची के अनुकूल रचना का चयन करता है। अनुवादक को यह सुविधा साहित्य की अन्य विधाओं में प्राप्त होती है, लेकिन नाटयानुवादक को यह सुविधा प्राप्त होगी ही उसकी कोई गारंटी नहीं होती। नाटयानुवाद पठन के लिए नहीं होते मंचन के लिये होते हैं और मंचन में नाटयनिर्माता और निर्देशक की रूचि महत्वपुर्ण होती हैं इसीलिए कहा जाता है कि, जबतक रचनाकार और नाटयनुवादक की वैवलेंथ नहीं मिलती, तब तक अनुवाद में मूल की रसाभिव्यक्ति,सौदर्योभिव्ययक्ति तथा संस्कृति-प्रतीकन की नवसर्जनात्मक चैतन्यशील प्रक्रिया नहीं होती।"४

मराठी नाटक एवं नाटकार :

भारतीय नाटयसाहित्य में मराठी नाटयसाहित्य एक विशिष्ट स्थान अपना बनायें हुये है क्योकी उन मराठी नाटकों में आपसी लोकरंगत्व जुडे हुये है जिसमें मराठी **के** प्रथम नाटकार विष्णुदास भावे का नाम लिया जाता है। भावे जी ने २५ से भी अधिक नाटक लिखे हैं। वे सभी नाटक यक्षगान सें प्रभावित थे । पौराणिक कथा, गीत तथा संगीत आदि लोकरंगतत्वों से निर्मित भावे के नाटकों की परंपरा किर्लोस्कर, देवल,कोल्हाटकर, खाडिलकर,गडकरी आदि के संगीत नाटकों के रूप में विकसित हुई।

संगीत नाटक को मराठी रंगमंच की एक अनोखी उपलब्धि कहा जाता है किन्तु धीरे-धीरे संगीत नाटकों में संगीत प्रधान हो गया और नाटक गौण। बालगंधर्व के समय में तो रंगमंच गान मैफिलों में तब्दील हुआ था। संगीत जब शस्त्रीय होने लगा, तब संगीत नाटक विशिष्ट वर्गो तक सिमट गया।

राम गणेश गडकरी के' भावबंधन' 'एकच प्याला' तक आते.आते मराठी नाटक सामाजिक यथार्थ और आदर्शो के आस- पास पहुँच गया था। मामा वरेरकर, प्र.के.अत्रे और मो.ग.रांगणेकर आदि ने गद्य नाटकों को प्रतिष्ठा प्रदान की है।

स्वातंत्र्यौत्तर काल में मराठी नाटक विविध रूपों में विकसित हुआ है। जिसमें पु.ल.देशपांडे, विजय तेंदुलकर, बाल कोल्हाटकर,वसंत कानेटकर, वि.वा.शिरवाडकर, जयवंत दळवी, रत्नाकार मतकरी, महेश एलकुंचवार आदि। नाटककारों के नाटकों से हिंदी जगत भी परिचित हो रहा हैं।

मराठी से हिंदी में अनूदित नाटक :-

मराठी से हिंदी में अनेकानेक नाटक अनूदित मिलते हैं, उसमें से कुछ महत्वपूर्ण एवं मुख्य नाटक कुछ इसप्रकार से हैं। पु.ल.देशपांडे का'कस्तुरी मृग' (१६६० ई) पदकी सरीता का 'खून का साया' (१६६० ई), वरेरकर भा.वि.के.. 'यही है वर का बाप' (१६६१ ई) 'उडते पंछी' (१६६१ ई),'सिंगापूरसे' (१६६२ ई), 'सारस्वत' (१६६२ ई) साठे शं.गो. का 'सपने सुहाने' (१६६४ ई) वसंत कानेटकर के 'जाग उठा रायगड' (१६६४ ई) , 'जंजीर (१६६४ ई) 'धूप के साये ' (१६६४ ई), 'ढाई अक्षर प्रेम का' (१६६५ ई).

वेररकर भा.वी. के 'नाश का विनाश'(१६६५ ई), 'सन्यासी का विवाह' (१६६५ ई)खाानोलकर चि.त्र्य. का 'एक शून्य बाजीराव' (१६६८ ई) सावरकर वि.दा.का 'पराया माल अपना'(१६७० ई) 'तेंदुलकर विजय के 'ऐसे पंछी आते हैं' (१६७१ ई) 'सखाराम बाइंडर' (१६७३ ई) ' खामोश!अदालत जारी हैं' (१६७३ ई) तोरडमल मधुकर का 'कृष्णद्वीप'१६७३ ई) शिरवाडकर वि.वा. का 'विदूषक' (१६७३ ई), कानेटकर वसंत के 'मुझे कुछ कहना है,'(१६७३ ई), 'बिन चहरों का पुरूष' (१६७७ ई) जयवंत दळवी का 'महासागर' (१६७७ ई) फळसणकर लीला का 'रात होती पर भोर ईक्रि' (१६७८ ई) कानेटकर वसंत के 'ऽझ्कृईझ्झ बन गेये फुल' (१६८०), 'टक्कर मुझसे है '(१६८३) 'मुकाबला मुझसे है' (१६८५) तेंदुलकर विजय का कमला ;१६८४द्ध लेले रा.बा. का 'सुलोचना सती' (१६८३) जयवंत दळवी का 'अरे शरीफ लोग'(१६८६).

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय नाटयसाहित्य में मराठी नाटकों की परंपरा सर्वश्रेष्ट है और वे समय के साथ अपने आप में परिवर्तनशील रहे हैं । हमें यह भी देखने को मिलता है कि मराठी के अनेकानेक नाटकों पर फिल्मे बन चुकी है क्योंकि वे आपसी लोकरंगतत्वों से जुडे हुये हैं और परिणाम स्वरूप अनुवाद विज्ञान के द्वारा वे हिंदी भाषा में भी ज्यादा मात्रा में अनूदित हुये हैं यह निष्कर्ष निकलता ळें

संदर्भ संकेत :-

1. अनुवाद सिध्दांत एवं प्रयोग - डॉ.जी. गोपीनाथन
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र श्शुक्ल
3. अनुवाद विज्ञान- भोलनाथ तिवारी
4. नाटयलोचन - डॉ माधव सोनटक्के